संपादकीय

हमारा देश विभिन्न भाषाओं एवं संस्कृतियों की विविधता को समेटे हुए एक विराट राष्ट्र है। इस राष्ट्र की गरिमा को विभिन्न महापुरुषों ने सर्वश्रेष्ठ बनाया तथा संवारा है। इन महापुरुषों ने देश और दुनिया को शांति, सौहार्द, समभाव, अखंडता और एकता का संदेश दिया। उनके इन्हीं विचारों को स्मरण एवं आत्मसात करने के दृढ़ संकल्प के साथ हाल ही में हमने महात्मा गांधी, सरदार वल्लभ भाई पटेल, लाल बहादुर शास्त्री आदि महापुरुषों की जयंती मनाई। इन महापुरुषों के जीवन मूल्यों एवं शिक्षाओं का हमारे समावेशी विकास की शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका है। जिसे भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सहजता से शामिल करते हुए देश में लागू किया गया है। इस नीति में शिक्षा व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ एवं जीवनोपयोगी बनाने की पहलें की गई हैं।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा बच्चे के उचित विकास के लिए नींव का कार्य करती है। अतः पूर्व-प्राथमिक शिक्षा से संबंधित लेख 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा' में बाल्यावस्था में बच्चों के पूर्ण विकास को केंद्र में रखकर बच्चों की भाषा व परिवेश से जुड़कर गतिविधि आधारित शिक्षा प्रदान करने पर चर्चा की गई है।

पंडित मदनमोहन मालवीय के शैक्षिक दर्शन का शिक्षा के क्षेत्र में बहुत महत्व रहा है। इस पर आधारित लेख 'पंडित मदनमोहन मालवीय का शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' दिया गया है, जिसमें उनके शैक्षिक विचारों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विभिन्न अध्यायों में वर्णित शिक्षा संबंधित सुझावों से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है।

आधुनिक तकनीकी के युग में इंटरनेट एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक इंटरनेट का प्रयोग करके अपने विषय की तैयारी करने में इलेक्ट्रॉनिक शैक्षिक संसाधनों का उपयोग करते हैं। वहीं पर विद्यार्थी भी इंटरनेट से अकादमिक सहायता प्राप्त करते हैं। इसी पर आधारित शोध पत्र 'इंटरनेट एवं शैक्षिक उपलब्धि सशक्तिकरण— एक अनुभवात्मक अध्ययन' प्रस्तुत किया गया है।

शिक्षकों को शिक्षण से पहले विद्यार्थियों की अभिरुचि, अभिक्षमता और अधिगम शैली को जानना आवश्यक है। यह जानने के लिए शिक्षक को एक विश्वसनीय एवं वैध परीक्षण या उपकरण की आवश्यकता होती है। इसी कड़ी में शोध पत्र 'अधिगम शैली मापदंड की रचना एवं वैधता निर्धारण' में, वैधानिक एवं विश्वसनीय परीक्षण विकसित करने की प्रक्रिया का वर्णन किया गया है।

शिक्षा में शोध अध्ययनों का विशेष महत्व है। इन शोध अध्ययनों के परिणामों से शिक्षा समुदाय को अवगत करने के लिए शोधार्थी बड़ी मेहनत से शोध पत्र लिखते हैं और अनेक शोध पत्रिकाओं में प्रकाशन हेतु भेजते हैं। किंतु कई ऐसी पत्रिकाएँ हैं जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा मान्यता प्राप्त नहीं हैं, जिन्हें शिकारी पत्रिकाएँ कहा जाता है। इन शिकारी पत्रिकाओं को रोकने के लिए कुछ सुझाव एवं प्रयासों का वर्णन लेख 'भारतीय उच्च शिक्षा, अनुसंधान एवं शिकारी पत्रिकाओं का फैलता जाल— एक समीक्षा' में किया गया है।

© NCERT not to be republished

भारत में शिक्षा के समग्र प्रयासों के बावजूद सामाजिक, आर्थिक, जेंडर, क्षेत्रीय इत्यादि आधारों पर विषमता परिलक्षित होती है, जिसमें विद्यार्थियों का नामांकन, ठहराव एवं ड्रॉप-आउट महत्वपूर्ण चर हैं और ये चर शैक्षिक प्रगति के महत्वपूर्ण संकेतक भी हैं। भारत के राज्यों में इन शैक्षिक चरों में बड़ी विविधता पाई जाती है। इस विविधता को जानने-समझने एवं इसके आकलन व विश्लेषण करने के लिए इन चरों के अर्थ, प्रकृति एवं इनके मुख्य संकेतकों को जानना-समझना आवश्यक है। इन्हीं चरों पर आधारित शोध पत्र 'नामांकन, ठहराव एवं ड्रॉप-आउट की समझ एवं इसके शैक्षिक निहितार्थ' दिया गया है। इसी प्रकार शोध पत्र 'विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति तथा अभिभावकीय आकांक्षा की भूमिका' पर विस्तृत चर्चा की गई है।

एक शिक्षक के लिए गणित विषय का शिक्षण विद्यार्थियों की विविधता के दृष्टिकोण से हमेशा से ही एक विशेष चुनौती रहा है। गणित विषय की विभिन्न शाखाओं में बीजगणित को मुख्यतः तार्किक एवं अमूर्त रूप वाला माना जाता है। लेख 'बीजीय तर्क— बीजगणित शिक्षण में एक नवाचार दृष्टिकोण' बीजगणित शिक्षण को सरल, सुगम एवं बाल-केंद्रित बनाने पर ज़ोर देता है। इसके अतिरिक्त शोध पत्र 'सामाजिक विज्ञान के शिक्षण के लिए कक्षागत अंत:क्रिया प्रतिमान का निर्माण' में कक्षागत अंत:क्रिया द्वारा सामाजिक विज्ञान शिक्षण को प्रभावशाली एवं विद्यार्थियों हेतु रोचकता उत्पन्न करने के प्रतिमान के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

किसी विद्यालय हेतु विद्यालयी संचालन में संतुलन बनाए रखने, अव्यवस्था पैदा होने से बचाने, राज्य या शिक्षा संबंधी नीतियों में बताए गए लक्ष्यों को साकार करने, प्रबंधन के फ़ैसले को क्रियान्वित करने, अभिभावकों की चिंताओं के निराकरण आदि के लिए एक उचित एवं कर्मठ नेतृत्व की आवश्यकता होती है। लेख 'विद्यालय नेतृत्व और अधिगम संस्कृति— आनंद निकेतन विद्यालय का वृत्त अध्ययन' में, विद्यालय प्रमुख सुषमा ताई के माध्यम से एक उत्तम नेतृत्व का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त लेख 'ट्रांसजेंडर समुदाय को शिक्षा— एक पहल (इग्नू के विशेष संदर्भ में)' में ट्रांसजेंडर्स की शिक्षा पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के शैक्षिक प्रयासों का वर्णन किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीयता को बनाए रखने पर ज़ोर दिया गया है। इसी पर आधारित लेख 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीयता' दिया गया है। इसमें ऐसी शिक्षा पर बल दिया गया है जो हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति के साथ-साथ केवल भौतिकता को ही नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों, चरित्र निर्माण, नैतिकता, संवेदनशीलता आदि मूल्यों पर आधारित हो।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें यह अंक आपको कैसा लगा। साथ ही, आशा करते हैं कि आप हमें अपने मौलिक तथा प्रभावी लेख, शोध पत्र, शैक्षिक समीक्षाएँ, श्रेष्ठ अभ्यास, पुस्तक समीक्षाएँ, नवाचार एवं प्रयोग, विद्यालयों के अनुभव आदि प्रकाशन हेतु आगे दिए गए पते पर प्रेषित करेंगे।

अकादमिक संपादकीय समिति

© NCERT not to be republished